निजानन्द सम्प्रदाय का विस्तार करने के वास्ते खुदा ने इसको बड़ी साहेबी दी है। तुम्हारे चाहने के अनुसार यही एहिया बेटा आया है।

खुसखबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले न सुध थी वजूद इन हाल।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे।। २३ ।।

जिकरिया पैगम्बर को पहले इस बात की उम्मीद नहीं थी। जब उसे एहिया लड़का मिलने की खबर फरिश्ते ने दी, तो वह बहुत खुश हुए। इस बात को किसी ने कभी जाना नहीं था। यह जब दूसरे जामे (तन) श्री प्राणनाथजी के तन में आए तब इन रहस्यों का पता चला।

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे।
मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह।। २४ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे मेरे खुदा मैं तुम्हारा एहसान कैसे चुकाऊं? मेरी जो अपनी औलाद गादीपति बिहारीजी हैं, वह यह काम नहीं कर सकती।

कह्या खुदाएने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी।
मरदों से बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन।। २५ ।।

खुदा ने कहा यह बात ठीक है कि तेरी औलाद गादीपति बिहारीजी मेरी हकीकत को जाहिर नहीं कर सकेगा। मोमिनों से बातें करने की ताकत इसमें नहीं है। यह तेरा लड़का बिहारीजी तीन रात और चौथा दिन की लीला बोल नहीं सकेगा, अर्थात् बृज, रास, जागनी और परमधाम की बात मोमिनों के साथ नहीं कर सकेगा।

ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन वीर।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजरका खबरदार।। २६ ।।

यह तेरे नसली बेटे गादीपति बिहारीजी की हकीकत है। यह ज्ञान की बातें मोमिनों के सिरदार श्री प्राणनाथजी महाराज ही कर सकेंगे। यह लैल तुल कदर के तीन भाग (बृज, रास, जागनी) की बात और फजर का ज्ञान मारफत सागर देकर सबको जगाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी।। २७ ।।

तेरा बेटा पैगम्बरी नहीं समझता, इसलिए तेरे नजरी पुत्र एहिया को धर्म का कार्य सौंपा है।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ४११ ॥

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद।
बड़ी द्वा माहें छिपके ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए।। १ ।।

अपने धाम धनी को छिपकर ही रिझाना चाहिए और तभी अपने धनी के नजदीक जाने का स्वाद मिलता है। यह मोमिनों की बन्दगी (चितवन) है। श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज ने छिपकर बन्दगी की और किसी को जाहिर नहीं होने दिया।

बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम।
बरस निन्यानवे कही हुरम, साथ ईसाके समझियो मरम।। २ ।।

निन्यानवे वर्ष (सम्वत् १७३७) रामनगर तक होते हैं। वहां तक श्यामा महारानी का दर्जा रहा, ऐसा समझना। आगे जब शेख खिदर के सामने खुद खुदाई का दावा लिया, तो हकी स्वरूप जाहिर हो गए।

Nijanand App

सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे।। ३ ।।

जिकरिया कहता है कि मेरी अब निन्यानवे वर्ष की उम्र हो गई है और बेटे की चाहना बाकी है। बूढ़ा ईसा (श्री देवचन्द्रजी) इतनी कमजोर आवाज से बोलते थे, जिसकी कोई परवाह नहीं करता था।

पांच जिल्दें इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार।। ४ ।।

यहां रामनगर तक रास, प्रकास, खटरुती, कलस, सनंध मिल गई थीं। फिर भी अपने खुदाई दावे को छिपाकर रखा, क्योंकि श्री देवचन्द्रजी की धीमी आवाज को सुनने वाला कोई सिरदार नहीं था।

आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामेंकी कहूं बात।। ५ ।।

जिकरिया (श्री देवचन्द्रजी) का इलम इस प्रकार था कि जिसे ज्ञान चाहिए, वह श्री देवचन्द्रजी के पास जाए। अब स्वामीजी कहते हैं कि अब दूसरे जामे अर्थात् मैं अपनी बात करता हूं।

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार।
खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर।। ६ ।।

जिकरिया पैगम्बर ने (श्री देवचन्द्रजी ने) कहा है कि मेरे खुदा! मेरी बात सुनो। बुढ़ापे ने मुझे कमजोर कर दिया। केवल शरीर में हड्डियां बाकी हैं और इस तन में केवल रीढ़ की हड्डी पर ही यह तन खड़ा है जिससे सभी अंग सुस्त हो गए हैं।

कह्या होवे वजूद तमाम, इन सें भली भांत होवे काम।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत।। ७ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे खुदा! यह शरीर भले बूढ़ा है, परन्तु इससे धर्म का काम अच्छी तरह से हो रहा है। मेरा सिर सफेद जरूर हो गया, परन्तु ज्ञान की रोशनी कम नहीं हुई है।

अंदर ज्वानी है रोसन, काह ज्यों पकड़े अगिन।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल।। ८ ।।

शरीर के अन्दर ज्ञान की जवानी है। जैसे घास के ढेर को आग जला देती है उसी तरह से ज्ञान की शक्ति से इनकी अर्जी खुदा ने स्वीकार की। बूढ़े होने पर तारतम ज्ञान से कमजोरी नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ४१९ ॥

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जांहें।
याद किया माहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान।। १ ।।

कुरान के सोलहवें सिपारे में सौ साल की मंजिल है और इद्रीस पैगम्बर का किस्सा लिखा है।

Nijanand App